Aql Mand Baap (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 456
Weekly Booklet : 456

अमीरे अहले सुन्नत का तक़रीबन 36 साल पहले का बयान

अ़क़्लमन्द बाप

सफ़ह़ात : 17

एक बुढ़िया की ह़ालते ज़ार 05
नौजवान डॉक्टर की मौत 08
कामयाबी का राज़ 13
अहम मस्अला 14

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

अ़क़्लमन्द बाप (1)

दुआ़ए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला "अ़क़्लमन्द बाप" पढ़ या सुन ले उसे दुनिया के ग़मों से नजात दे कर दो जहां की ख़ुशियां नसीब फ़रमा और मां बाप समेत बे ह़िसाब बख़्श दे।

اٰمین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जिस ने शौक़ व मह़ब्बत की वजह से दिन और रात में मुझ पर तीन तीन मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह पाक पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और रात के गुनाह बख़्श दे। (معجم کبیر، 18/362، حدیث:928)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

अ़क़्लमन्द बाप

मन्क़ूल है : एक शख़्स का छोटा बच्चा उस के साथ बिस्तर पर सोया करता था, एक रात बच्चा बहुत बेचैन हुवा और सो नहीं पाया। बाप ने बच्चे से पूछा : क्या कहीं दर्द हो रहा है ? बच्चे ने जवाब दिया : अब्बाजान ! दर्द तो कहीं नहीं हो रहा, दर अस्ल बात येह है कि कल जुमेरात है और हर जुमेरात को हमारे उस्ताद

1 ...येह बयान शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने 10 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1410 हि. बमुत़ाबिक़ 12 सितम्बर 1981 ई में सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में फ़रमाया था। जिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शोबे "बयानाते अमीरे अहले सुन्नत" ने मुरत्तब किया है।

साहिब पूरे हफ़्ते में पढ़ाए जाने वाले अस्बाक़ का इम्तिहान लेते हैं, मुझे इस हफ़्ते का सबक़ सहीह़ से याद नहीं है और मुझे ख़ौफ़ है कि अगर मैं ने सबक़ सहीह़ न सुनाया तो उस्ताद साहिब मुझ से नाराज़ हो जाएंगे और सज़ा भी देंगे। भोले भाले बच्चे की भोली भाली बातें सुन कर बाप की आंखों में आंसू आ गए और वोह अपना मुहासबा करते हुए दिल ही दिल में अपने आप से कहने लगा : इस बच्चे ने सिर्फ़ एक हफ़्ते के अस्बाक़ का इम्तिहान देना है और येह इस क़दर ख़ौफ़ज़दा है कि सो नहीं पा रहा जब कि मुझे तो क़ियामत के दिन बारगाहे इलाही में ज़िन्दगी भर किए जाने वाले गुनाहों का हिसाब देना है लिहाज़ा इस की निस्बत मुझे ज़ियादा ख़ौफ़ज़दा होना चाहिए। (درۃ الناصحین، ص255 ملخصًا)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! इस दुनिया में ऐसे नेक लोग भी मौजूद हैं जिन्हें दुनिया की चीज़ें देख कर आख़िरत की याद आ जाती है, इस ज़िम्न में एक और वाक़िआ़ पढ़िए, चुनान्चे

जहन्नम की आग का ख़ौफ़

ख़लीफ़ए आला ह़ज़रत, फ़क़ीहे आज़म मौलाना अबू यूसुफ़ मुहम्मद शरीफ़ कोटलवी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ अपनी किताब "अख़्लाक़ुस्सालिह़ीन" में लिखते हैं : एक बुज़ुर्ग رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ पर ख़ौफ़े ख़ुदा का इस क़दर ग़लबा रहता कि जब कभी चराग़ जलाते तो जहन्नम की आग को याद कर के रोने लग जाते।

(अख़्लाक़ुस्सालिह़ीन, स. 67 माख़ूज़न)

बहर ह़ाल दुनियवी इम्तिह़ान में नाकामी के ख़ौफ़ से बच्चे को बेचैन होता देख कर उस के वालिद का अपनी आख़िरत के इम्तिह़ान को याद कर के ख़ौफ़े ख़ुदा से लरज़ जाना बहुत इ़ब्रत अंगेज़ है। इस वाक़िए का एक एक लफ़्ज़ बल्कि एक एक ह़र्फ़ अपने अन्दर इ़ब्रत के बे बहा मोती लिए हुए है और येह वाक़िआ़ हम सब को दावते इ़ब्रत देता है। अगर देखा जाए तो आ़म त़ौर पर हम दुनिया के हिसाब व

किताब से डरते हैं लेकिन अफ़सोस ! आख़िरत के ह़िसाबो किताब से नहीं डरते ह़ालांकि दुनिया का ह़िसाबो किताब बहुत आसान जब कि आख़िरत का ह़िसाबो किताब बहुत मुश्किल है। याद रखिए ! ह़िसाबो किताब लेना अल्लाह पाक के चाहने पर मौक़ूफ़ है वोह जिस से चाहेगा ह़िसाब लेगा और जिसे चाहेगा बग़ैर ह़िसाबो किताब जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा लेकिन ह़िसाबो किताब का लिया जाना बहुत ही सख़्त मुआ़मला है।

मैदाने म़ह़शर के 5 सुवालात

सरवरे ज़ीशान, ऱह़मते आ़लमियान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : क़ियामत के रोज़ बन्दा उस वक़्त तक क़दम नहीं हटा सकेगा जब तक वोह इन 5 सुवालात के जवाबात न दे ले : ﴿1﴾ उ़म्र किस काम में सर्फ़ की ? ﴿2﴾ जवानी कैसे गुज़ारी ? ﴿3,4﴾ माल किस त़रह़ कमाया और किस त़रह़ ख़र्च किया ? ﴿5﴾ अपने इ़ल्म पर कहां तक अ़मल किया ? (ترمذی، 4/1884، حدیث:2424)

हम में से जो जवान हैं उन्हें ग़ौर करना चाहिए कि वोह जवानी किस त़रह़ गुज़ार रहे हैं ? अगर बरोज़े क़ियामत उन से येह सुवाल पूछ लिया गया कि जवानी कैसे गुज़ारी ? तो वोह इस का क्या जवाब देंगे ? नीज़ जिन लोगों की जवानी गुज़र चुकी उन्हें ज़ियादा ग़ौर करना चाहिए कि उन्हों ने जवानी किस त़रह़ गुज़ारी ! अगर जवानी अल्लाह पाक की रिज़ा और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत के मुत़ाबिक़ नहीं गुज़ारी तो उन्हें इस पर अश्कबारी और अल्लाह पाक के ह़ुज़ूर गिर्या व ज़ारी कर के तौबा करनी चाहिए कि अभी तौबा का दरवाज़ा खुला है। सुब्ह़ का भूला शाम को लौटे तो उसे भूला नहीं कहते।

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! अभी हमारी ज़बान में सकत बाक़ी है, अ़क़्ल सलामत है और मरने से पहले पहले तौबा का मौक़ा मुयस्सर है लिहाज़ा हमें फ़ौरन

तौबा कर लेनी चाहिए। जो लोग इस वक़्त जवानी की दहलीज़ पर क़दम रख चुके हैं और पुर शबाब व पुर बहार ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं उन्हें चाहिए कि अपनी जवानी पर तरस खाएं, नेक आमाल बजा लाएं और याद रखें ! अ़न्क़रीब उन की जवानी ढलने वाली है। किसी शाइ़र ने क्या ख़ूब कहा है :

ढल जाएगी येह जवानी जिस पे तुझ को नाज़ है तू बजा ले चाहे जितना चार दिन का साज़ है

जहां तक जवानी ढलने का तअ़ल्लुक़ है तो येह बहुत कम लोगों की ढलती है क्यूंकि बहुत से लोग जवानी ढलने से पहले ही मौत की आग़ोश में चले जाते और अन्धेरी क़ब्र की गहराई में जा पहुंचते हैं। आप अपने मह़ल्ले का जाइ़ज़ा ले लीजिए कि आप के मह़ल्ले में कितने बूढ़े मर्द और कितनी बूढ़ी ख़वातीन मौजूद हैं ? शायद आप इस नतीजे पर पहुंचें कि अगर आप के मह़ल्ले में मसलन एक हज़ार अफ़राद की आबादी है तो उस में आप को बच्चे कसरत से मिलेंगे, बच्चों से थोड़ी बड़ी उ़म्र वाले भी काफ़ी नज़र आएंगे, नौजवान भी बहुत दिखेंगे लेकिन जिन मर्दों को "बूढ़ा" या जिन ख़वातीन को "बुढ़िया" कहा जा सके उन की तादाद 15 या 20 होगी, इस से पता चलता है कि सिर्फ़ दो फ़ीसद लोग बुढ़ापे तक पहुंच पाते हैं, बक़िय्या 98 फ़ीसद लोग जवानी ढलने से पहले ही अपनी क़ब्रों में जा पहुंचते हैं। याद रहे ! बुढ़ापे तक पहुंचना आसान नहीं क्यूंकि जवानी से बुढ़ापे तक पहुंचने के लिए आदमी को बीमारियों, बड़े बड़े ह़ादिसों, मुसीबतों वग़ैरा मुश्किल तरीन मरह़लों से जान बचा कर निकलना पड़ता है।

बुढ़ापा आसान नहीं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बुढ़ापे की ज़िन्दगी परेशानियों का शिकार होती है। येही वजह है कि जो शख़्स बुढ़ापे की मन्ज़िल तक पहुंचता है उस के चेहरे पर मुस्कुराहट बहुत कम देखी जाती है और जब कभी वोह हंसता है तो उस की हंसी

फीकी फीकी मालूम होती है जिस के पीछे मायूसी छुपी होती है। नीज़ जब उ़म्र बढ़ने के साथ साथ बुढ़ापा मज़ीद बढ़ता है तो फिर बूढ़े शाख़्स के लिए कोई ख़ुशी, ख़ुशी और कोई ग़म, ग़म नहीं रहता यहां तक कि वोह मौत की तमन्ना करने लगता है। इस ज़िम्न में एक इ़ब्रत अंगेज़ वाक़िआ़ पढ़िए, चुनान्चे

एक बुढ़िया की ह़ालतेज़ार

एक बार मैं (यानी अमीरे अहले सुन्नत) किसी अ़लाक़े में बयान करने के लिए गया तो एक इस्लामी भाई मुझे और मेरे साथ मज़ीद कुछ इस्लामी भाइयों को मेहमान नवाज़ी के लिए अपने घर ले गए। वहां चार पाई पर एक बहुत ही ज़ियादा कमज़ोर "बुढ़िया" बैठी थी जिसे बुढ़ापे ने इतना कमज़ोर कर दिया था कि बेचारी सुकड़ कर बहुत छोटी सी हो गई थी, क़रीब से गुज़रने वाला कोई भी शाख़्स उस की त़रफ़ हमदर्दी से देखता तक न था, मुझे इस की ह़ालत देख कर बड़ा तर्स आया और मैं ने ज़रा रुक कर उस का दिल बहलाने के लिए पूछा : बड़ी बी ! आप कैसी हैं ? उस ने ऐसा जवाब दिया जो कई साल गुज़र जाने के बावुजूद आज भी मुझे याद है और शायद मैं मरते दम तक उसे नहीं भूलूंगा क्यूंकि उस में मेरे लिए इ़ब्रत का सामान है, मेरे पूछने पर उस बुढ़ियाने ह़सरत भरी आवाज़ में कहा : मैं बहुत बीमार हूं, तुम दुआ़ करो अल्लाह मुझे मुह़म्मद صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े मौत दे दे। उस बुढ़िया के तक़रीबन येही अल्फ़ाज़ थे जो आज तक मेरे कानों में गूंज रहे हैं। (याद रखिए ! रंजो मुसीबत से घबराकर मौत की दुआ़ करना मना है। (फ़ज़ाइले दुआ़,स. : 182))

आह ! वोह बुढ़िया कभी अपने बचपन को याद कर के रोती होगी कि वोह बचपन में किस त़रह़ खेलती, दौड़ती, हंसती और बोलती थी, कभी अपनी जवानी को याद कर के रोती होगी कि कितनी धूम धाम से उस की शादी हुई थी, किस त़रह़

लोग उस की बलाएं लेते थे, किस त़रह़ उसे ख़ुशियां मिलती थीं, किस त़रह़ बच्चे उस की ख़िदमत किया करते थे और किस क़दर शानो शौकत से वोह शादियों में आया जाया करती थी, आह ! इस त़रह़ की बातें सोच कर उस बुढ़िया का दिल डूब जाता होगा और वोह दिल ही दिल में अपने आप से कहती होगी : हाय अफ़सोस ! अब मैं कुछ नहीं कर सकती, ना किसी के हां शादी में जाने के क़ाबिल रही हूं और ना ही मय्यित में। बहरह़ाल उस बुढ़िया के लिए न कोई ख़ुशी, ख़ुशी थी और ना कोई ग़म, ग़म था बस वोह मौत की तमन्ना किए जा रही थी।

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ज़िन्दगी एक ख़्वाब या खेल कूद का नाम है जिस का दौरानिया बहुत मुख़्तसर है। ग़ौर कीजिए ! शायद ही कोई शख़्स ऐसा हो जिस के घर से जनाज़ा न उठा हो या उस ने किसी मुर्दे को ग़ुस्ल न दिया हो या ग़ुस्ल देने में किसी की मदद ना की हो या किसी को कफ़न न लपेटा हो या कफ़न लपेटने में किसी का साथ न दिया हो, अगर किसी ने येह सब काम नहीं किए तो कम अज़ कम उस ने किसी मुसलमान के जनाज़े को ज़रूर कन्धा दिया होगा या वोह किसी मुसलमान के जनाज़े में ज़रूर शरीक हुवा होगा या जनाज़े के साथ क़ब्रिस्तान गया होगा या किसी की मय्यित को क़ब्र में उतारते वक़्त उस ने लोगों का साथ दिया होगा, यूं हज़ारों बल्कि लाखों लोग अपनी मुख़्तसर सी ज़िन्दगी गुज़ार कर राहे आख़िरत के मुसाफ़िर बन चुके हैं।

दुनिया सरापा इ़ब्रत है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह दुनिया है ही उजड़ने के लिए, जो पैदा हुवा, वोह है ही मरने के लिए, यूं इस दुनिया में इ़ब्रत ही इ़ब्रत है। अगर ग़ौर किया जाए तो इन्सान की पैदाइश से पहले ही इ़ब्रत शुरूअ़ हो जाती है वोह इस त़रह़ कि जब नुत़्फ़ा मां के रह़म में क़रार पकड़ता है तो रह़म पर मुअक्कल (यानी मुक़र्रर)

फ़रिश्ता उस जगह की मिट्टी उठा कर लाता है जिस जगह उस नुत्फ़े से पैदा होने वाले बच्चे ने मरने के बाद दफ़्न होना होता है और फिर उस मिट्टी से मां के पेट में पुतला बनाता है। (نوادر الاصول، 2/114-115، حدیث:304 ملتقطاً)

मालूम हुवा पैदा होने से पहले ही मौत का तअ़य्युन हो चुका है और हम मरने के बाद जिस मिट्टी में जाने वाले हैं वोह पहले से ही हमारे बदन में पहुंच चुकी है और उसी से हमारा जिस्म बना हुवा है। क़ब्र पर मिट्टी डालते वक़्त पढ़ी जाने वाली दुआ के तर्जमे पर ग़ौर कर लीजिए ! मालूम हो जाएगा कि हम मिट्टी से बने हैं। अफ़सोस ! बहुत से लोगों को क़ब्र पर मिट्टी डालने की दुआ याद नहीं होती और न ही मिट्टी डालने का त़रीक़ा आता है। अल्लाह पाक की रिज़ा पाने, सवाबे आख़िरत कमाने की निय्यत से क़ब्र पर मिट्टी डालने का मुस्तह़ब त़रीक़ा पेशे ख़िदमत है, चुनान्चे

क़ब्र पर मिट्टी डालने का मुस्तह़ब त़रीक़ा

क़ब्र पर मिट्टी डालने का मुस्तह़ब त़रीक़ा येह है कि सिरहाने की त़रफ़ से दोनों हाथों से तीन बार मिट्टी डालें। पहली बार कहें : ﴿مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ﴾ (हम ने ज़मीन ही से तुम्हें बनाया), दूसरी बार कहें : ﴿وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ﴾ (और उसी में तुम्हें फिर ले जाएंगे), तीसरी बार कहें ﴿وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى﴾ (پ16، طٰہٰ:55) (और इसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे)। अब बाक़ी मिट्टी फावड़े वग़ैरा से डाल दीजिए।

(الجوہرۃ النیرۃ، ص141)

दुनियवी ज़िन्दगी की ह़क़ीक़त

ऐ अ़ाशिक़ाने रसूल ! दुनियवी ज़िन्दगी खेल कूद के सिवा कुछ नहीं, चुनान्चे अल्लाह पाक दुनियवी ज़िन्दगी की ह़क़ीक़त बयान करते हुए इरशाद फ़रमाता है :

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ؕ وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۶۴﴾

(پ21، العنکبوت:64)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह दुनिया की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद और बेशक आख़िरत का घर ज़रूर वोही सच्ची ज़िन्दगी है क्या अच्छा था अगर जानते।

इस आयते मुबारका के तह़त ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नई़मुद्दीन मुरादाबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इरशाद फ़रमाते हैं : जैसे बच्चे घड़ी भर खेलते हैं, खेल में दिल लगाते हैं फिर उस सब को छोड़ कर चल देते हैं येही ह़ाल दुनिया का है कि येह निहायत जल्द ख़त्म होने वाली है और मौत यहां से ऐसा ही जुदा कर देती है जैसे खेल वाले बच्चे मुन्तशिर हो जाते हैं।

(तफ़्सीर ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, पा 21, अल अ़न्कबूत, तह़तल आयह : 64, स. 747)

जब बच्चा खेल कूद में मगन होता है तो उस का वक़्त इतनी जल्दी गुज़रता है कि उस को पता तक नहीं चलता, इसी त़रह़ दुनियवी ज़िन्दगी की मिसाल है कि वोह भी बड़ी जल्दी गुज़र कर ख़त्म हो जाती है और आदमी को पता तक नहीं चलता। बहुत से लोग अपना मुस्तक़बिल रौशन करने की फ़िक्र में मगन होते हैं कि इतने में मौत का शिकार हो कर अन्धेरी क़ब्र में जा पहुंचते हैं। याद रखिए ! हमारा ह़क़ीक़ी मुस्तक़बिल क़ब्र से वाबस्ता है जिस में हमें हज़ारों साल रहना है इस की तय्यारी करनी चाहिए। आज हम दुनिया में जिसे अपना मुस्तक़बिल समझ बैठे हैं वोह हमारा ह़क़ीक़ी मुस्तक़बिल नहीं और ज़रूरी नहीं कि वोह हमें ह़ासिल भी हो जाए। इस ज़िम्न में एक इ़ब्रत अंगेज़ वाक़िआ़ पेशे ख़िदमत है, चुनान्चे

नौजवान डॉक्टर की मौत

मुल्क के मश्हूर शहर से तअ़ल्लुक़ रखने वाला एक शख़्स परचून की दुकान चला कर अपना गुज़र बसर किया करता था। उस की ख़्वाहिश थी कि मेरा

बेटा किसी त़रह़ अमेरीका चला जाए, वहां पढ़ लिख कर डॉक्टरी की डिग्री ह़ासिल करे, फिर वापस अपने मुल्क में आ कर एक प्राइवेट क्लीनिक खोले, अपना मुस्तक़बिल ख़ूब रौशन करे और मेरे लिए बुढ़ापे का सहारा भी बने। अपनी इस ख़्वाहिश को पूरा करने के लिए आख़िरेकार उस दुकानदार ने अपना पेट काट कर या लोगों से क़र्ज़ा ले कर इतनी रक़म जमा कर ली कि वोह अपने बेटे को अमेरीका भेज सके, चुनान्चे उस ने अपने फूल जैसे बेटे का मुस्तक़बिल रौशन करने के लिए उसे अमेरीका भेज दिया। बेटे ने अमेरीका में डॉक्टरी की तालीम मुकम्मल की और फिर वत़न में आ कर वालिद की ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ अपने घर के क़रीब एक प्राइवेट क्लीनिक खोल लिया। बाप बड़ा ख़ुश था कि अब मेरे बेटे का मुस्तक़बिल रौशन हो गया और मुझे बुढ़ापे का सहारा मिल गया।

चूंकि अभी तक उस डॉक्टर की शादी नहीं हुई थी लिहाज़ा बाप ने सोचा पहले कुछ सर्माया जमा हो जाए ताकि मेरे बेटे का मुस्तक़बिल ख़ूब अच्छी त़रह़ चमक दमक कर रौशन हो जाए फिर उस की शादी करूंगा, आख़िर इतनी जल्दी ही क्या है ? अपने मन्सूबे को पूरा होता देख कर बाप बड़ी ख़ुशी से ज़िन्दगी के दिन गुज़ारने लगा लेकिन क़ुदरत को कुछ और ही मन्ज़ूर था, हुवा कुछ यूं कि क्लीनिक खोलने के दो या तीन महीने बाद उस नौजवान डॉक्टर को पीलिया हो गया, उस ने अपने त़ौर पर दवाएं इस्तिमाल कीं लेकिन इफ़ाक़ा न हुवा, फिर जब बड़े डॉक्टरों से रुजूअ़ किया गया तो उन्हों ने इसे हॉस्पिटल में दाख़िल कर दिया। आह ! चन्द रोज़ बिस्तरे अ़लालत पर गुज़ारने के बाद जो नौजवान दो या तीन माह पहले अमेरीका से डॉक्टर बन कर आया था भरपूर जवानी में इन्तिक़ाल कर गया। बाद में उस के बाप को येह कहते सुना गया कि हाय अफ़सोस ! मैं ने अपने बेटे की तालीम पर जो पैसे ख़र्च किए थे अभी वोह वुसूल नहीं हो पाए थे कि बेटा इन्तिक़ाल कर गया।

हुए नामवर बे निशां कैसे कैसे
ज़मी खा गई नौजवां कैसे कैसे
जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! नौजवान डॉक्टर बुढ़ापे की दहलीज़ पर क़दम रखने से पहले ही भरपूर जवानी के आ़लम में मौत का शिकार हो गया। ज़रा सोचिए ! डॉक्टरी की डिग्री उसे क़ब्र में क्या काम देगी ? ऐ काश ! अगर उस के बाप ने उसे ह़ाफ़िज़े क़ुरआन बनाया होता तो न सिर्फ़ उस की बल्कि उस के घरवालों की भी आख़िरत संवर जाती, नीज़ इतना सर्माया भी ख़र्च न होता और न ही एक बूढ़े बाप को अपने फूल जैसे बेटे को तालीम के लिए ग़ैरों के सिपुर्द करना पड़ता लेकिन अफ़सोस ! ऐसा न हो सका।

येह वाक़िआ़ हमें इ़ब्रत की दावत दे रहा है लेकिन बहुत से लोग इ़ब्रत ह़ासिल करने के बजाए इस त़रह़ के वाक़िआ़त एक कान से सुन कर दूसरे कान से निकाल देते हैं। आज कल सूरते ह़ाल कुछ यूं है कि गोया बे नमाज़ियों ने त़ै कर लिया है कि चाहे कुछ भी हो जाए हम ने नमाज़ नहीं पढ़नी, दाढ़ी मुन्डाने वालों ने शायद क़सम खाई है कि चाहे मौलाना लोग कितना ही ज़ोर लगा लें हम कभी भी शैत़ान से बेवफ़ाई कर के दाढ़ी नहीं रखेंगे, फ़िल्में ड्रामे देखने वालों ने अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है कि चाहे कुछ भी हो जाए हम फ़िल्में ड्रामे देखने से बाज़ नहीं आएंगे। बहरह़ाल ज़बाने क़ाल से (यानी अपने मुंह से) तो कोई नहीं कहता अलबत्ता ज़बाने ह़ाल (यानी अपने अ़मल) से बहुत से लोग येही कहते दिखाई देते हैं कि हम न सुधरे हैं न सुधरेंगे, क़सम खाई है।

दाढ़ी रखना आज कल مَعَاذَاللہ ! मुआ़शरे में एक ऐ़ब शुमार किया जाने लगा है ह़ालांकि जिस सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद की एक झलक देखने के लिए हम तड़पते हैं उस सब्ज़ गुम्बद के मकीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक चेहरे पर ह़सीन दाढ़ी सजी होती थी, सरे अक़्दस पर नूरानी इ़मामा शरीफ़ सजा होता था और प्यारे प्यारे गेसू झूम झूम कर मुबारक कानों को चूम लिया करते थे। जो लोग इस लिए दाढ़ी मुन्डाते हैं कि कहीं "**मुल्ला**" न बन जाएं तो ऐसों को ग़ौर करना चाहिए कि जिस हस्ती का उन्हों ने कलिमा पढ़ा है उन के मुबारक चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ जगमगा रही होती थी।

ऐ बे नमाज़ियो तुम भी सुनो ! ऐ माहे रमज़ान के रोज़े बिला उ़ज़्रे शरई़ क़ज़ा कर डालने वालो तुम भी सुनो ! ऐ जुवा खेलने वालो तुम भी सुनो ! ऐ शराब नोशी करने वालो तुम भी सुनो ! ऐ हेरोइन और चरस पीने वालो तुम भी सुनो ! ऐ वीडियो गेम्ज़ खेलने खिलाने वालो तुम भी सुनो ! ऐ वीडियो सेन्टर चलाने वालो तुम भी सुनो ! ऐ मां बाप को सताने वालो तुम भी सुनो ! ऐ दाढ़ी मुन्डाने और एक मुट्ठी से कम करवाने वालो तुम भी सुनो ! ऐ मुसलमानों को बेजा ईज़ा पहुंचाने वालो तुम भी सुनो ! अपनी औलाद की सुन्नत के मुत़ाबिक़ तरबियत न करने वालो तुम भी सुनो ! ज़िद छोड़ो, सीधे रास्ते पर आ जाओ और याद रखो ! अगर यूंही गुनाहों का सिल्सिला जारी रहा और तुम अपनी इसी ज़िद पर डटे रहे कि हम नमाज़ें नहीं पढ़ेंगे, रमज़ानुल मुबारक के रोज़े नहीं रखेंगे, फ़िल्में ड्रामे देखने से बाज़ नहीं आएंगे तो अल्लाह पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नाराज़ हो सकते हैं और مَعَاذَاللہ ! ईमान भी बरबाद हो सकता है, अगर ऐसा हुवा तो अ़ज़ाबे जहन्नम में गिरिफ़्तार होना पड़ेगा। बत़ौरे इ़ब्रत जहन्नम में कुफ़्फ़ार को दिए जाने वाले अ़ज़ाब की एक झलक पढ़िए, चुनान्चे अल्लाह पाक क़ुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَ اَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ﴿۶۶﴾ وَ قَالُوْا رَبَّنَآ اِنَّآ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَ كُبَرَآءَنَا فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ﴿۶۷﴾ رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَ الْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا ﴿۶۸﴾ (پ22، الاحزاب:66تا68)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस दिन उन के मुंह उलट उलट कर आग में तले जाएंगे कहते होंगे हाय किसी त़रह़ हम ने अल्लाह का हुक्म माना होता और रसूल का हुक्म माना होता और कहेंगे ऐ हमारे रब हम अपने सरदारों और अपने बड़ों के कहने पर चले तो उन्हों ने हमें राह से बहका दिया ऐ हमारे रब उन्हें आग का दूना (दुगना) अ़ज़ाब दे और उन पर बड़ी लानत कर।

पता चला जो अपने लीडरों या अपने बड़ों की वजह से सीधे रास्ते को छोड़ेगा वोह गुनाहगार और अ़ज़ाबे नार का ह़क़दार होगा। इस पर उन लोगों को भी ग़ौर करना चाहिए जो दाढ़ी रखने के लिए तय्यार हो जाते हैं लेकिन कहते हैं कि पहले हम अपने वालिद साह़िब से दाढ़ी रखने की इजाज़त लेंगे, अगर उन्हों ने इजाज़त दे दी तो दाढ़ी रख लेंगे वरना नहीं रखेंगे। याद रखिए ! अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का हुक्म मख़्लूक़ के हुक्म पर मुक़द्दम है। हमें शरीअ़त के अह़काम मानने चाहिएं वरना सिवाए पछताने के कुछ हाथ न आएगा।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने बयान की इब्तिदा में मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि एक बच्चा इस ख़ौफ़ से रो रहा था कि उस ने उस्ताद को सबक़ सुनाना था और फिर उस का वालिद भी येह सोच कर रोया था कि मेरे बच्चे को अपने सबक़ का इतना एह़सास है लेकिन मुझे इस बात का कोई एह़सास नहीं कि मैं ने आख़िरत में इतना बड़ा ह़िसाबो किताब देना है । याद रखिए ! दुनिया दारुल इम्तिह़ान है, आख़िरत में कामयाब या नाकाम होने के लिए दुनिया में जैसी तय्यारी करेंगे आख़िरत में वैसे ही नताइज बरआमद होंगे।

कामयाबी का राज़

अल्लाह पाक हमें उ़ख़रवी कामयाबी का राज़ बताते हुए इरशाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۙ﴿۷۰﴾ يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿۷۱﴾

(پ22، الاحزاب:70-71)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और सीधी बात कहो तुम्हारे आमाल तुम्हारे लिए संवार देगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और जो अल्लाह और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी करे उस ने बड़ी कामयाबी पाई।

इन आयाते मुबारका से पता चला कि आख़िरत के इम्तिहानात में कामयाब होने की येही सूरत है कि अल्लाह पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इ़ताअ़त व फ़रमां बरदारी अपने ऊपर लाज़िम कर ली जाए क्यूंकि अह़कामे इलाहिय्या पर अ़मल और इत्तिबाए सुन्नत किए बग़ैर नजात बहुत मुश्किल है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه आशिक़ाने रसूल की दीनी तन्ज़ीम दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल में हमें येही दर्स दिया जाता है कि हम अपनी आख़िरत की तय्यारी करें, इस मुख़्तसर सी ज़िन्दगी में अल्लाह पाक को न भूलें और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर अ़मल करना न छोड़ें।

अल्लाह पाक बे नियाज़ व बेपरवा है, अगर सारी दुनिया नमाज़ न पढ़े तो यक़ीनन उसे कोई नुक़्सान नहीं पहुंचेगा और अगर सारी मख़्लूक़ उस के सामने सज्दा रेज़ हो जाए तो उस की अ़ज़मत को नहीं बढ़ा सकती। हां ! नमाज़ पढ़ने में हमारा अपना ही फ़ायदा है, अगर हम नमाज़ पढ़ेंगे तो अपने आप को उ़ख़रवी नुक़्सान से बचाएंगे और नहीं पढ़ेंगे तो हमारे लिए दर्दनाक अ़ज़ाब की वईदें मौजूद हैं और हम जहन्नम के ह़क़दार ठहरेंगे जैसा कि क़ुरआने पाक में है :

فِیْ جَنّٰتٍ ۛ یَتَسَآءَلُوْنَ ۙ﴿۴۰﴾ عَنِ الْمُجْرِمِیْنَ ۙ﴿۴۱﴾ مَا سَلَكَكُمْ فِیْ سَقَرَ ﴿۴۲﴾ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ
الْمُصَلِّیْنَ ۙ﴿۴۳﴾ وَ لَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِیْنَ ۙ﴿۴۴﴾ وَ كُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآىٕضِیْنَ ۙ﴿۴۵﴾ وَ كُنَّا
نُكَذِّبُ بِیَوْمِ الدِّیْنِ ۙ﴿۴۶﴾ حَتّٰۤى اَتٰىنَا الْیَقِیْنُ ؕ﴿۴۷﴾ (پ29، المدثر:40تا47)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बाग़ों में पूछते हैं मुजरिमों से तुम्हें क्या बात दोज़ख़ में ले गई वोह बोले हम नमाज़ न पढ़ते थे और मिस्कीन को खाना न देते थे और बेहूदा फ़िक्र वालों के साथ बेहूदा फ़िक्रें करते थे और हम इन्साफ़ के दिन झुटलाते रहे यहां तक कि हमें मौत आई।

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! आप ने नमाज़ न पढ़ने से मुतअ़ल्लिक़ क़ुरआने पाक की आयाते मुबारका मुलाहज़ा फ़रमाईं तो इन्सान जो कि कमज़ोर व नातुवां है, मामूली गर्मी सर्दी बरदाश्त नहीं कर सकता, तेज़ हवा के झोंकों से लरज़ उठता है, आंधी की गरज जिसे ख़ौफ़ज़दा कर देती है, जो मामूली सा नज़ला ज़ुकाम सहने की ताक़त नहीं रखता, बुख़ार जिसे बिस्तर पर डाल देता है, जब इन्सान इतना कमज़ोर है तो उसे चाहिए कि उख़रवी अ़ज़ाबात से डर कर फ़ौरन तौबा करे, नेकियों भरी ज़िन्दगी गुज़ारना शुरूअ़ करे, बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ गुज़ार हो : ऐ अल्लाह ! मैं तेरी नाराज़ी नहीं बल्कि रिज़ा और ख़ुशनूदी चाहता हूं, तेरा अ़ज़ाब सहने की ताक़त नहीं रखता, तेरे इस हुक्म ﴿اَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ﴾ (پ1، البقرۃ:43) तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "नमाज़ क़ाइम रखो।" पर आज ही से अ़मल करने का अ़हद करता हूं और निय्यत करता हूं कि आज के बाद اِنْ شَآءَاللّٰه मेरी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं होगी।

अहम मस्अला

येह मस्अला पेशे नज़र रखिए कि आइन्दा नमाज़ क़ज़ा न करने की निय्यत से पिछली क़ज़ा नमाज़ें मुआ़फ़ नहीं हो जाएंगी बल्कि उन्हें भी अदा करना होगा नीज़ तौबा भी करनी होगी कि ऐ अल्लाह ! मुझ से नमाज़ें क़ज़ा करने का जो गुनाह

हुवा तू उसे मुआ़फ़ फ़रमा ! अल्लाह पाक की रह़मत से उम्मीद है कि वोह उस गुनाह को मुआ़फ़ फ़रमा देगा।

याद रखिए ! नमाज़ की ख़ूब ताकीद की गई है यहां तक कि फ़रमाया गया है कि "अगर कोई शख़्स पानी में डूब रहा है और वोह उस वक़्त भी बग़ैर अ़मले कसीर के इशारे से नमाज़ पढ़ सकता है मसलन तैराक है या लकड़ी वग़ैरा का सहारा पा जाए तो उस पर नमाज़ पढ़ना फ़र्ज़ है, वरना माज़ूर है बच जाए तो क़ज़ा पढ़े।"

(बहारे शरीअ़त, 1/725, ह़िस्सा : 4)

ग़ैर मुस्लिमों जैसी शक्ल मत बनाओ

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ें क़ज़ा करने के साथ साथ दाढ़ी मुन्डाने का गुनाह भी हमारे मुआ़शरे में आ़म हो चुका है ह़ालांकि प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजी हुई थी और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुसलमानों को दाढ़ी शरीफ़ रखने का हुक्म भी इरशाद फ़रमाया जैसा कि ह़दीसे पाक में है कि अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दाढ़ी बढ़ाओ और यहूदियों की सी शक्ल मत बनाओ। (مسلم، ص125، حدیث:603)

दाढ़ी मुन्डाना और एक मुठ्ठी से कम करवाना दोनों ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं (फ़तावा रज़विय्या, 6/505) लिहाज़ा दाढ़ी मुन्डाने और एक मुठ्ठी से कम करवाने से तौबा कर लीजिए और अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता किसी ने दाढ़ी मुन्डाने या एक मुठ्ठी से कम करवाने की ज़िद कर रखी थी तो वोह अपनी इस "ज़िद" को शैत़ानी काम समझते हुए छोड़ दे कि गुनाह पर अड़े रहना शैत़ानी सिफ़त है, चुनान्चे

शैत़ान की ज़िद

ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام एक मरतबा कोहे त़ूर की त़रफ़

तशरीफ़ ले जा रहे थे कि रास्ते में शैत़ान मर्दूद मिल गया और रोते हुए कहने लगा : मैं तौबा करना चाहता हूं, आप अल्लाह पाक से सुवाल कीजिए कि मेरी तौबा का त़रीक़ा क्या है ? ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام अल्लाह पाक की बारगाह में पेश हुए और शैत़ान की तौबा का त़रीक़ा पूछा तो अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया : इस से कह दीजिए कि अगर वोह आदम عَلَيْهِ السَّلَام की क़ब्र को सज्दा कर ले तो मैं इस की तौबा क़बूल कर लूंगा। ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने शैत़ान से फ़रमाया : मैं तेरी तौबा का त़रीक़ा पूछ कर आया हूं, बस तुम आदम عَلَيْهِ السَّلَام की क़ब्र को सज्दा कर लो तुम्हारी तौबा क़बूल कर ली जाएगी। येह सुन कर शैत़ान ठट्ठा मार कर हंसा और कहने लगा : ऐ मूसा ! मैं उस वक़्त आदम عَلَيْهِ السَّلَام के सामने नहीं झुका कि जब वोह ब नफ़्से नफ़ीस मेरे सामने मौजूद थे तो अब मैं उन की क़ब्र के सामने कैसे झुक सकता हूं? (تنبیہ الغافلین، ص110 ماخوذاً)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मालूम हुवा बुराई पर अड़े रहना शैत़ानी काम है और शैत़ान का अन्जाम भी आप के सामने है कि उस के गले में लानत के त़ौक़ डाले गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! हम मुसलमान हैं और मुसलमान का काम बुराई पर डटे रहना नहीं बल्कि इस से दूरी इख़्तियार करना है। सभी मुसलमानों को प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी ह़सीन सूरत पसन्द है :

उन के जल्वों में हैं वोह दिलचस्पियां जो यहां पहुंचा यहीं का हो गया

सब इस्लामी भाई निय्यत करें कि आज के बाद प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत की निशानी (यानी दाढ़ी शरीफ़) हमारे चेहरे से कभी भी नहीं कटेगी और आज ही से हमारा चेहरा प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत से जगमगाना शुरूअ़ हो जाएगा اِنْ شَآءَاللّٰه।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा
अ़क़्लमन्द बाप	01
जहन्नम की आग का ख़ौफ़	02
मैदाने मह़शर के 5 सुवालात	03
बुढ़ापा आसान नहीं	04
एक बुढ़िया की ह़ालतेज़ार	05
दुनिया सरापा इ़ब्रत है	06
क़ब्र पर मिट्टी डालने का मुस्तह़ब त़रीक़ा	07
दुनियवी ज़िन्दगी की ह़क़ीक़त	07
नौजवान डॉक्टर की मौत	08
कामयाबी का राज़	13
अहम मस्अला	14
शैत़ान की ज़िद	15

अगले हफ़्ते का रिसाला

DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ ہند
MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025